स्त्रियों का नजरिया प्रमुखता से उभरता है। लोक कला मर्मज्ञ कोमल कोठारी कहते थे कि लोक गीत हमारे राजस्थान की स्त्रियों के लिए वेद है, उपनिषद है, संस्कृति है, संस्कार हैं, समाज है, जीवन है, कला है और काव्य है। इन्हीं गीतों की छाया में उनका सहज मन पलता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि राजस्थान के लोक गीतों में नारी मन का साक्षात्कार होता है।

आम तौर पर राजस्थानी लोक गीतों में झरती प्रेम, विरह और प्रीतम के आगमन की बाट जोहती प्रेयसी की अभिव्यक्तियों की ही चर्चा होती है साथ ही सास, ससुर, ननद, मां, पिता और दादा की भी बातें होती हैं। इन लोक गीतों में भाई-बहिन के रिश्तों को भी बड़ी खूबसूरती से गाया गया है, जिस पर हमारा उतना ध्यान नहीं जाता।

भाई और बहन की प्रीत बहुत घनी होती है क्योंकि दोनों साथ खेलते-रूठते मनाते बड़े होते हैं और उनमें सखा भाव होता है। विवाह के बाद बहन का प्रदेश जाना भाई को भी उतना खलता है जितना बहन को। ऐसे मौके आते हैं जब दोनों की एक दूसरे की याद घनी हो जाती है। इन्हें अभिव्यक्त करते राजस्थानी लोकगीत उतने ही संवेदना वाले हैं जितने प्रेयसी और प्रीतम के रिश्तों के।

राजस्थानी लोक गीतों में भाई-बहनों के रिश्तों पर अनेक कथाएं पिरोई मिलती हैं। विवाह के समय बहन और भाई के बीच सुन्दर वार्तालाप सुनाने को मिलता है जो उनके रिश्तों की प्रगाढ़ता को प्रकट करता है। हमारी सामजिक व्यवस्था में बहन विवाह के बाद जब अपने ससुराल परदेस चली जाती है तब उसे वार त्योहार या पारिवारिक समारोहों में बुला लाने के लिए भाई ही जाता है। इसलिए इन लोक गीतों में परदेस में बहन अपने भाई की हमेशा बाट जोहती अभिव्यक्त होती है। विवाह के बाद ससुराल में भाई की प्रतीक्षा को लोक गीतों में बड़ी नाजुकता से स्वर मिला है। सच बात तो यह है कि भाई बहन के स्नेह के विषय में लोकगीतों में जितना कुछ कहा गया है उतना शास्त्रीय काव्यों में भी नहीं मिलता।

राजस्थान में भाई बहनों के संबंधों को लेकर कई महत्वपूर्ण त्योहार मनाए जाते हैं। इन त्योहारों में भाइयों के प्रति बहनों का सारा स्नेह उमड़कर लोकगीतों में मुखरित हुआ नजर आता है। इनमें मुख्य त्योहार हैं राखी, सावण की तीज और भैया दूज। इन त्योहारों पर बहन के जीवन में सुख, खुशहाली, अमर सुहाग, और प्रसन्नता भरे सफल जीवन की कामना की जाती है।

सावन में रेगिस्तान में मेह बरस रहा है और चारों ओर उमंग और खुशी का माहौल है। ऐसे में नायिका का प्रीतम परदेस में होने से उसका दुख लोक गीतों में उतरता है तो उसके भाई से दूर होने का भी दुख भी शिद्दत से व्यक्त होता है। परदेस बैठी बहन के घर में ब्याह है तो भात भरने उसका भाई ही आता है। उस वक्त बहन की अपने भाई से मिलने की व्यग्रता को लोकगीत व्यक्त करते हैं। उसके इंतजार को दर्शाता यह लोकगीत देखिए-

वीराजी धोम पड़ै ने धरती तपै/पड़ै रे नगारां वाली ठोर –जामण रा जाया / इण नै अवसरिये बेगा आवजो। वीराजी नांणां मिलै नै टांगौ नी मिलै / नगरी में राखूं थांरी सोभ – ओ जामण जाया इण नै अवसरिये बैगा आवजो।

जब भाई पहुंच जाता है तब बहन की खुशी को व्यक्त करता लोकगीत कहता है-

'बागां में बाज्या जंगी ढोल शहरां में बाजी शहनाई जी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर। चूनड़ तो ल्यायौ रेशमी जी।'

भाई जो उपहार ले कर आया है उसके लिए लोकगीत में बहन कहती है-

मेलू तो छाब भरीजै, तोलू तो तोला तीस जी ओढूं तो हीरा खीर जाय, भरूं तो हाथ पचास जी।

लोकगीतों में बहन का ही स्नेह और प्रेम नहीं छलकता भाई का अपनी बहन के प्रति नेह की गाथा भी वे कहते हैं। वार-त्योहार पर, खास कर राखी पर भाई अपनी बहन को किस कदर याद करता है उसकी बानगी देखिए-

आयौ वैरी सावण मास के बैन ? झुर-झुर रोऊं
आयौ राखी रो तिंवार के बैन ? झुर-झुर रोऊं।

राखी के त्योहार पर उसके हाथ पर राखी बांधने वाली बहिन दूर परदेस में अपनी ससुराल में है। भाई किसी को थाल में राखी लिए जाते देखता है तो उसकी टीस लोक गीत में इस तरह व्यक्त होती है-

वा कोई वीरा री बैन ? भर राख्यां रो थाल
भावज री लाड़कली नणदल, कर सोलै सिणगार
जावै है वा हंसती गाती ले साथणियां साथ

ऐसे में उसे अपनी हालत पर रुलाई आती है कि वह किस तरह राखी के बिना सूने हाथ बैठा है-

बैठ्यौ हूं म्हूं मनडौ मारियां, लियां अड़ोलौ हाथ/के बैनड़ झुर-झुर रोऊं।

भाई कहता है

कुण बांधैला इण हाथां में अब राखी रा तार
कुण करैला साचा मन सूं अब वीरा ने प्यार
बैठ्यौ हूं म्हूं भूखौ प्यासौ कुण करै मनवार
के बैन ? झुर-झुर रोऊं।